SHRI RATAN KAHAR

Shri Ratan Kahar is an exponent of folk song Bhadu Gan and many other types of songs.

2. Born on 1st January,1945, Shri Kahar resides in Nagaripara, Sonatorepara Mouja, Suri Birbhum, Jharkhand.He has been active in this art practice for more than 65 years. He had been performing on stage since he was 9 years old. Bhadu and Alcup songs are traditional form of Folk Culture particularly in this part of West Bengal i.e. in the district of Birbhum. Along with dancing he had a natural inclination to write songs. This talent of his manifested in writing parody songs for Bhadu and Alcup in the initial part of his life and soon with the abundance of his talent he started to write original songs from a very early age in his life. He has written at least 250-300 original Bhadu and folk songs. He has performed on Radio and Television several times in his life.

3. Shri Kahar himself provides tune to the numerous Bhadu, Alcup and various types of Folk songs written by him. Indianness has been expressed in all over his creations. He wrote and sang songs of the soil, and these songs told tales of the common and neglected men. His songs like 'Boroloker Biti lo', 'O Ravan pala re, Lanka ghirechhe Hanuman' were sung by legendary folk singers like Swapna Chakroborty, Purna Das Baul and many others.

4. Even today, Shri Kahar gets up before dawn for the rendition of devotional prabhati songs, which is called 'Tahal' in this part of West Bengal. His songs have been entertaining and teaching people in their own inimitable ways at least for the last 60 years. He himself is an institution.

5. Shri Kahar was felicitated many times by various Government institutions like the Department of Information & Culture and private institutions. The State Government has given a monetary benefit of Rs 1000/- per month as Artiste Allowance. Despite receiving little in terms of assistance, he didn't stop the pursuit of his passion which fascinated both rural and urban people of West Bengal and India alike.

श्री रतन काहार

श्री रतन काहार लोकगीत भादु गान और कई अन्य प्रकार के गीतों के रचनाकार हैं।

2. 1 जनवरी, 1945 को जन्मे, श्री काहार नगरीपारा, सोनातोरेपारा मौजा, सूरी बीरभूम, झारखंड में रहते हैं। वह 65 वर्षों से अधिक समय से इस कला के क्षेत्र सक्रिय हैं। वह 9 साल की उम्र से ही मंच पर प्रस्तुतियां देते रहे हैं। भादु और अलकप गीत विशेष रूप से पश्चिम बंगाल के इस हिस्से यानी बीरभूम जिले में लोक संस्कृति का पारंपरिक रूप हैं। नृत्य के साथ–साथ गीत लिखने की ओर उनका स्वाभाविक रुझान था। उनकी यह प्रतिभा उनके जीवन के शुरुआती दौर में भादु और अलकप के लिए पैरोडी गीत लिखने में प्रकट हुई और जल्द ही अपनी प्रचुर प्रतिभा के कारण उन्होंने बहुत कम उम्र से ही मौलिक गीत लिखना शुरू कर दिया। उन्होंने कम से कम 250–300 मौलिक भादु और लोक गीत लिखे हैं। उन्होंने कई बार रेडियो और टेलीविजन पर प्रस्तुतियां दी हैं।

3. श्री काहार खुद अपने लिखे अनेक भादु, अलकप तथा विभिन्न प्रकार के लोकगीतों की धुन बनाते हैं। उनकी सभी रचनाओं में भारतीयता अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने माटी से जुड़े गीत लिखे और गाए, और इन गीतों ने आम और उपेक्षित लोगों की कहानियां कहीं। उनके गीतों जैसे 'बोरोलोकेर बिटी लो', 'ओ रावण पाला रे, लंका घिरेचे हनुमान' को स्वप्ना चक्रवर्ती, पूर्ण दास बाउल और अन्य प्रसिद्ध लोक गायकों ने अपनी आवाज़ दी।

4. आज भी, श्री काहार भक्तिमय प्रभाती गीतों, जिन्हें पश्चिम बंगाल के इस हिस्से में 'ताहल' कहा जाता है, की प्रस्तुति के लिए भोर से पहले उठते हैं। उनके गीत कम से कम पिछले 60 वर्षों से अपने अनोखे तरीके से लोगों का मनोरंजन कर रहे हैं और उन्हें शिक्षा दे रहे हैं। वह अपने आप में एक संस्थान हैं।

5. श्री काहार को कई बार सूचना और संस्कृति विभाग जैसे विभिन्न सरकारी संस्थानों और निजी संस्थानों द्वारा सम्मानित किया गया। राज्य सरकार उन्हें कलाकार भत्ते के रूप में प्रति माह 1000 रुपये की राशि प्रदान करती है। बहुत कम आर्थिक सहायता मिलने के बावजूद, उन्होंने अपना जुनून बनाए रखा, जिसने पश्चिम बंगाल के साथ साथ बाकी भारत के ग्रामीण और शहरी दोनों तरह के लोगों का मन मंत्रमुग्ध किया।